SKR-2

4.

किशन वार्ता

साहित्यिक एवं
सांस्कृतिक पत्रिका

सितम्बर-दिसम्बर
2018

संपादन

शैलेन्द्र राकेश

संपादन सहयोग
राकेश रंजन
मनीष रंजन

परामर्श
नंदकिशोर नवल
ब्रजकुमार पाण्डेय
सिद्धिनाथ मिश्र
मदन कश्यप

कला संपादन
इमरान अहमद

कार्यालय
किरण मंडल,
ज्योति निवास
गाँधी आश्रम, हाजीपुर
ब्लॉग: kiranvarta.blogspot.in

शैलेन्द्र राकेश
ई-मेल: skrakesh15@gmail.com
मो0: 9931612939, 8092760026

किरण वार्ता, किरण मंडल प्रकाशन से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हाजीपुर न्यायालय के अधीन होंगे।

प्रकाशक-मुद्रक : शैलेन्द्र राकेश द्वारा किरण मंडल, ज्योति निवास, गाँधी आश्रम, हाजीपुर, वैशाली के लिए प्रकाशित तथा पारस पब्लिकेशन प्रा. लि. इंडस्ट्रियल एरिया, हाजीपुर, वैशाली, बिहार -844101 से मुद्रित।
संपादक - शैलेन्द्र राकेश

सहयोग राशि-तीस रूपये

सितंबर-दिसंबर, 2018

पूर्णांक-11 वर्ष-05 । अंक-03 । सितंबर-दिसंबर, 2018

किरण वार्ता

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

सम्पादकीय	**2-3**
शख्सियत	**4-16**
नंदकिशोर नवल की साहित्य-साधना - सतीश कुमार राय	4-6
मैनेजर पांडेय की आलोचना दृष्टि - देवशंकर नवीन	7-10
ज्ञानेन्द्रपति: कविता की एक अलग दुनिया - रश्मि रेखा	11-13
हिंदी कहानी में असगर वजाहत - पल्लव	14-16
विशिष्ट कवि	**17-22**
लीलाधर मंडलोई	17-19
लीलाधर मंडलोइ : शब्द जिन्हें जानते हैं - अमिताभ राय	20-22
पुस्तक-समीक्षा	**23-33**
इन्द्रप्रस्थ : दर्द का महाकाव्यात्मक आख्यान - वंदना सिंह	23-24
स्त्री की संघर्ष-गाथा : हसीनाबाद - प्रियदर्शन	25-26
जन संस्कृति के पक्षधर कवि हैं श्रीप्रकाश शुक्ल - अशोक कुमार	27-30
गालिब डिप्रेशन के शिकार थे: मनोचिकित्सा संवाद - अनीश अंकुर	31-33
धरोहर	**34-37**
आकाशदीप -जयशंकर प्रसाद	34-37
कहानी	**38-52**
नो..! - कैलाश बनवासी	38-43
डोंट बी इमोशनल - महेश दर्पण	44-46
बैचलर एंड एन ओल्ड मैन - रामनगीना मौर्य	47-52
गीत-गजल, कविताएँ	**53-61**
ज्ञानप्रकाश विवेक / यश मालवीय	53-61
मुकेश प्रत्यूष /अनीता सिंह / रोहित ठाकुर	
पुण्य स्मरण	**62-64**
प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' - अश्विनी कुमार आलोक	62-64
बज्जिकांगन	**65-72**
शांतिप्रिय जनपद की सृजन संवेदना - संजय पंकज	65-69
बज्जिका साहित्य के पुरोधा : अवधेश्वर अरुण - ध्रुव कुमार	70-71
बज्जिका के गीत	72-72

नंदकिशोर नवल की साहित्य-साधना

सतीश कुमार राय

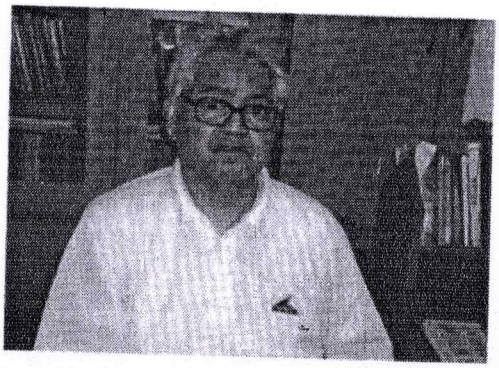

नंदकिशोर नवल आधुनिक हिंदी-साहित्य के गंभीर अध्येता, प्रखर आलोचक, ओझल कवि, दक्ष संपादक और कुशल संस्मरण-लेखक हैं। शास्त्रों का साक्ष्य लेकर कहा जाय तो उनमें कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा का सहज समन्वय है। उनका अभिव्यक्ति-सौष्ठव सम्मोहित करता है और उनके विचार उद्वेलित करते हैं। मूल पाठ को फिर से पढ़ने के लिए उत्प्रेरित भी करते हैं।

ऐसा माना गया है कि कविता ही साहित्य का प्रवेश-द्वार है। नवल जी ने कवि के रूप में अपना साहित्यिक जीवन प्रारंभ किया। प्रेम और प्रकृति उनकी प्रारंभिक कविताओं के वर्ण्य विषय थे, उनकी संवेदना के मूलाधार थे। 1950 ई० में तेरह वर्ष की अवस्था में वे साहित्यिक संस्था किरण-मंडल से जुड़े। गोष्ठियों में निरंतर उपस्थित होकर उन्होंने अपनी साहित्यिक रुचि विकसित और परिष्कृत की। 1951 ई० में अपने समय की अत्यंत लोकप्रिय पत्रिका 'योगी' में उनका गीत छपा, जिसका शीर्षक था-'साथी, किस पर मैं अपना प्यार लुटाऊँ।' इस प्रेमगीत में भावना का ज्वार था, समर्पण की आकांक्षा थी और सहृदय साथी की तलाश भी।

1952 ई० में प्रसिद्ध कवि रामगोपाल शर्मा 'रुद्र' के संपर्क में आने के बाद उनकी काव्य-प्रतिभा निखरने लगी और वे प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे। 1954 ई० में उनका पहला कविता-संग्रह 'मंजीर' प्रकाशित हुआ, जिसमें पच्चीस गीत थे। 1965 ई० में हिन्दी से एम.ए. करने के बाद वे आलोचना की ओर उन्मुख हुए। 1966 ई० में उनका पहला आलोचनात्मक लेखक 'गीत : नवगीत' शीर्षक से 'माध्यम' पत्रिका (इलाहाबाद) में छपा। नवगीत आंदोलन की उपादेयता और गीत के नवगीत में रूपांतरण को इस लेख में स्पष्ट कर दिया गया है।

आलोचना के क्षेत्र में सक्रिय और मान्य हो जाने के कारण उनका कवि-रूप ओझल हो गया किन्तु स्वांत: सुखाय के लिए वे कविताएँ लिखते रहे। 1977 ई० में उनका दूसरा कविता-संग्रह 'कहाँ मिलेगी पीली चिड़िया' प्रकाशित हुआ, जिसमें 1958 से 1978 ई० के मध्य लिखी गई एक सौ तैंतालीस कविताएँ संकलित हैं। 'जनपद: विशिष्ट कवि' (2006 ई०) और 'द्वाभा' (2010 ई०) में भी उनकी कविताएँ संगृहीत हैं। 2014 ई० में युवा कवि-आलोचक राकेश रंजन ने उनकी एक सौ सत्ताईस कविताओं को खोजकर 'पथ यहाँ से अलग होता है' शीर्षक संग्रह में प्रकाशित कराया।

मानवीय संवेदना की गहरी गूँज नवल जी की कविताओं में सुनाई पड़ती है। उनकी कविताओं में प्रेम व्यष्टि से समष्टि तक प्रसार पाता है। कविताओं में स्वप्न है तो हकीकत भी, आकुल अंतर की पुकार है तो बाह्य जगत से साक्षात्कार भी। अपनी कविताओं से वे आत्मा को दीप्त-करना चाहते हैं-उदास और कलुष-मुक्त। वे कहते हैं-

चाहता हूँ / मैं लिखूँ
चाहता हूँ / मैं लिखूँ
और ऐसा लिखूँ,
जो चमड़ी को गुदगुदाए नहीं,
अग्नि-शलाका के समान
भीतर घुसता चला जाए
और आत्मा के स्तर-स्तर को
इस प्रकार प्रज्वलित कर दे
कि उसकी लपट बाहर तक आए।
(11-08-1960)

उनकी काव्य-भाषा बिम्ब प्रधान है।भावों के साथ विचारों का तादात्म्य उनकी कविताओं को संप्रेष्य बनाता है और सहज भी। 'तुम' शीर्षक यह छोटी कविता कितना भाव-समृद्ध है-

मैंने तुम्हें / बूँद-बूँद लिया / सागर, तुम चुके नहीं।
मैंने तुम्हें/ कदम-कदम रौंदा / पर्वत तुम झुके नहीं।
मैंने तुम्हें / सहस्र बाँह घेरा/ निर्झर, तुम रुके नहीं।

नवल जी की कल्पना में ताजगी है, आकांक्षाओं का मूर्त्त रूप है। 'यदि सचमुच' कविता में कल्पना की यह ताजगी द्रष्टव्य है-

यदि तुम सचमुच / गुलाब का एक फूल होती
तो मैं तुम्हें / दुनिया की नजरों से बचाए

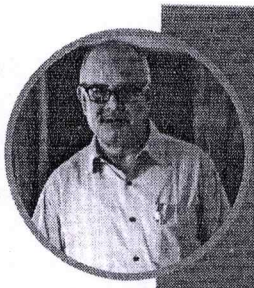

सतीश कुमार राय
जन्म: 27 मई, 1962, बेतिया
शिक्षा: परास्नातक (स्वर्णपदक प्राप्त), पी.एचडी, डी लिट
प्रकाशन: सात मौलिक एवं सोलह संपादित पुस्तकें
संपादन: शोध-निकष, शोध-मनीषा
संप्रति: प्रोफेसर हिन्दी विभाग, बी.आर.ए. भीमराव अंबेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
संपर्क: 20, प्राध्यापक आवास, विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर, मो: 9934203870/9430805390

अपने कोट के बटन होल में/ खोंसे चलता।

मेरे संपूर्ण क्रिया-कलाप पर एक खुशबू छा जाती,

मेरा वजूद तरोताजा बना रहता।

मुझे जब कभी एकांत मिलता/ मैं तुम्हें जिन्दा हस्ती में तब्दील कर लेता

फिर तुमसे बातें होतीं/ फिर हमारी राते होंती। (25-08-1979)

नवलजी की कविताएँ आत्मालाप ही नहीं है, उनमें मानवीय संवेदना की गहरी गूँज भी है। माँ पर लिखी गई उनकी कविता में भावों की तीव्रता है और छीजते मानवीय संबंधें को बचाने का प्रयत्न भी। कवि के रूप में वे स्थापित भले ही न हुए हों किन्तु उनमें शक्ति और संभावनाओं की कमी नहीं रही है। उनके आलोचक रूप की भव्यता में उनका कविरूप उसी तरह ओझल हो गया है जैसा डॉ रामविलास शर्मा और डॉ नामवर सिंह का हुआ था।

नवल जी संस्मरण-लेखक भी हैं। पत्र-पत्रिकाओं में उनके संस्मरण यदा-कदा प्रकाशित होते रहे हैं। इधर उनकी एक पुस्तक 'मूरतें माटी और सोने की (2017) आई है। दो खंडों की इस पुस्तक के पहले खंड में घर और गाँव के पाँच चरित्र हैं और दूसरे खंड में नागार्जुन, डॉ० रामविलास शर्मा, त्रिलोचन, प्रो नलिन विलोचन शर्मा और डॉ नामवर सिंह से जुड़े मार्मिक प्रसंग हैं और उनके वैशिष्ट्य का रेखांकन भी।

नवल जी का संस्मरण-लेखन औपचारिकता का निर्वाह मात्र नहीं है। यह उनकी सहजता, आत्मीयता और प्रभाव ग्राह्यता की रचनात्मक उपलब्धि है। इस क्षेत्र में पहली बार वे 1994 ई० में उपस्थित हुए। 21 अगस्त, 1994 के 'हिन्दुस्तान' (पटना) दैनिक के रविवासीय परिशिष्टांक में उनका पहला किन्तु महत्त्वपूर्ण संस्मरण छपा-'जनतायन की वे शामें।' 'जनतायन' की शुरुआत के संबंध में वे लिखते हैं- ''जहाँ तक मै समझता हूँ, जनतायन में साहित्यिक अड्डेबाजी की शुरुआत पचास के दशक के आरंभ के साथ हुई। उसके प्रारंभकर्त्ता पटना के उस समय के दबंग व्यक्तित्व वाले लेखक ब्रजकिशोर नारायण और मधुर व्यक्तित्व वाले रामगोपाल शर्मा 'रुद्र' थे, जो कि उनके अभिन्न मित्र हो गए थे।'' वे इसकी रचनात्मक भूमिका को रेखांकित करते हुए आगे लिखते हैं-''जनतायन साहित्यिक गपशप का अड्डा तो था ही, महत्त्वपूर्ण सम्पर्क केन्द्र भी था। विभिन्न संस्थाओं और प्रतिष्ठानों से जुड़े लोग वहाँ प्राय: आते और एक दूसरे से मिलते-मिलाते। हास्य की धारा वहाँ अविरल प्रवाहित होती रहती थी, जिसमें एक-दो डुबकियाँ लगाने से ही मन की थकान दूर हो जाती थी और ताजगी महसूस होती थी। नारायण जी बहुत ही जिन्दादिल व्यक्ति थे। उनके नेतृत्व में नियमित सदस्यों की मंडली कभी किसी कवि गोष्ठी या कवि-सम्मेलन में हिस्सा लेती, कभी फिल्म देखने भी जाती और कभी सोनपुर का मेला घूमने का कार्यक्रम ही बना बैठती। इसमें शामिल होकर मैंने अनेक कवि-गोष्ठियों में कविता पाठ किया था और उसके लिए पटना के बाहर के कवि-सम्मेलनों में गया था। 1954 की गर्मियों में स्थानीय एलिफिस्टन सिनेमा हॉल में शांता राम की फिल्म 'फिर सुबह होगी' लगी थी। वह भी मैंने रुद्रजी और नारायण जी के साथ देखी थी। उसमें हम लोगों का साथ हंस कुमार तिवारी ने दिया था।''

उनके अन्य प्रमुख प्रारंभिक संस्मरण हैं-आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा पर केन्द्रित स्मरण को पाथेय बनने दो (1996 ई०), अपने मित्र कुलानंद मिश्र पर 'कंहैया, काहे लगायौ पिरीत' (2002 ई०) और अपने गाँव, अपनी साहित्यिक गतिविधि, अपने कवि जीवन, प्रमुख साहित्यकारों के स्नेह-प्रोत्साहन के माध्यम से छठे दशक के साहित्यिक परिदृश्य को रेखांकित करनेवाला लम्बा स्मृतिलेख 'गूँज बची है, गीत गए।' (2002 ई०)

'मूरतें माटी और सोने की' के संस्मरण आम और विशिष्ट के रोचक प्रसंगों और प्रेरक संदर्भों को एक साथ प्रस्तुत करते हैं। उनमें गँवई संस्कारों की जीवंतता की गूँज है तो साहित्य-साधना की सार्थक दिशाओं का रेखांकन भी। संस्मरणों के चरित्र सामान्य होकर भी विशिष्ट हैं और विशिष्ट होकर भी सहज और जिंदादिल। भूमिका में अपने संस्मरणों पर कुछ नहीं कहते हुए भी वे इस विधा की प्रकृति को स्पष्ट करने के संदर्भ में बहुत कुछ कह देते है-''मैंने पहले भी स्फुट संस्मरण लिखे थे, पर इस विधा की असली नजाकत से मै

अब जाकर परिचित हुआ। संस्मरणीय वही व्यक्ति होता है, जिसमें कोई वैशिष्ट्य हो। हिन्दी में इधर एकाध ऐसे संस्मरण-लेखक हुए हैं, जिन्होंने अपने चरित्रों की बखिया उधेड़ी है और उनपर जितनी कालिख पोती जा सकती थी, पोती है। मैं निवेदन कर दूँ कि संस्मरण प्रतिशोध-भाव से या आत्मप्रक्षेपण के लिए नहीं लिखे जाते। उसका सौंदर्य संस्मरणीय व्यक्ति के वैशिष्ट्य को उजागर करने में और उस क्रम में अपनी चरम विनयशीलता का परिचय देने में है।'' (पृष्ठ-7)

नवल जी की प्रसिद्धि का मूलाधर उनका आलोचना-कर्म है। शोध और रचना-दृष्टि से संपन्न उनकी आलोचनाएँ रचनाकार के अंतर्मन को परखती हुई रचना की मूल संवेदना और वैशिष्ट्य को रेखांकित करती हैं। वे मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं किन्तु जड़ मार्क्सवादी नहीं। वे परंपरा और परिवेश को परखते हुए कृति अथवा कृतिकार का विश्लेषण करते हैं, उसकी शक्ति और सीमा की ओर संकेत करते हैं। उनकी आलोचना में सहृदयता तो है किन्तु अंधश्रद्धा नहीं। वे पाठ के भीतर उतरते हैं, उसकी आत्मा का संधान करते हैं और उसकी संरचना पर सम्यक् विचार भी। अपनी व्यक्तिगत रुचि, मान्यता और वैचारिक प्रतिबद्धता को वे अपनी आलोचना पर हावी नहीं होने देते।

एक आलोचक के रूप में नवलजी की उपस्थिति 1980 ई० में 'कविता की मुक्ति' शीर्षक पुस्तक से हुई। इसमें पन्द्रह आलोचनात्मक लेख संगृहीत हैं। आरंभिक छह लेखों में कविता से संबंधित सैद्धांतिक विवेचन है और बाद के नौ लेखों में छायावादोत्तर कवि और कविताओं पर गंभीर विमर्श है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें प्रसिद्ध कवियों के साथ जातीय परंपरा के उपेक्षित किन्तु अत्यंत प्रखर और महत्त्वपूर्ण कवि रामजीवन शर्मा 'जीवन' के काव्य वैशिष्ट्य को पहली बार गंभीरता के साथ उजागर किया गया है।

1981 ई० में नवलजी की दो आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हुईं-'महावीर प्रसाद द्विवेदी' और 'हिन्दी आलोचना का विकास।' पहली पुस्तक साहित्य अकादेमी की भारतीय साहित्य के निर्माता-शृंखला के अंतर्गत लिखा गया विनिबंध है। इसमें नवलजी की शोध और आलोचना-दृष्टि तो परिलक्षित होती ही है, उनका सार संग्रही विवेक भी झलकता है। प्रख्यात आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा के ग्रंथ 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' से संदर्भ सामग्री और अपेक्षित सूचनाएँ ग्रहण करने के बावजूद इसकी कई स्थापनाएँ नवीन और मौलिक हैं।

'हिन्दी आलोचना का विकास' हिन्दी आलोचना का इतिहास भी है और इसकी परंपरा का मूल्यांकन भी। वैसे नवलजी इसको इतिहास नहीं मानते हैं, विकासक्रम का रेखांकन मानते हैं। इस ग्रंथ में परंपरा का पुनरीक्षण भी है और विरासत को पहचानने की दृष्टि भी। वस्तुत: इस ग्रंथ में नवल जी की आलोचना-दृष्टि अधिक सूक्ष्म और अधिक व्यापक हो गई है। यहाँ तक पहुँचकर नवल जी एक समर्थ आलोचक के रूप में मान्य हो जाते हैं। इसके बाद आलोचना के क्षेत्र में उनकी साधना दीप्त हो उठती है।

नवलजी मुख्यत: काव्यालोचक हैं। आधुनिक हिन्दी-कविता के अतिरिक्त उन्होंने रीतिकाव्य का पुनर्मूल्यांकन भी किया है और भक्तिकाल के दो विशिष्ट कवियों की काव्य-प्रतिभा का रेखांकन भी। नवलजी की आलोचना में पाठ के साथ सहज संवाद की प्रवृत्ति मिलती है। वे रचना के भीतर उतरकर उसका विवेचन- विश्लेषण करते हैं। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने एकेडमिक और सर्जनात्मक आलोचना के पार्थक्य को खत्म किया है और समन्वयवादी आलोचना की परंपरा को अग्रेषित भी। उनकी आलोचना में शुष्क बौद्धिकता नहीं है वह सहृदयता है जो आलोचना को अधिक प्रामाणिक और संप्रेष्य बनाती है। उनकी आलोचना परंपरा के बोध, अधुनातन शोध और कठिन अध्यवसाय से विकसित हुई है।

नवलजी ने 'सिर्फ', 'धरातल', 'उत्तरशती' और 'कसौटी' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं का कुशल सम्पादन भी किया है और आलोचना में सह-संपादक के रूप में उन्होंने डॉ० नामवर सिंह का सहयोग भी किया है। 'कसौटी' साहित्यिक पत्रिका के इतिहास में मील-स्तंभ की तरह है। रचना और विचार, आलोचना और संवाद, बौद्धिक हस्तक्षेप के साथ नई रचनाधर्मिता के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए 'कसौटी' चिरस्मरणीय रहेगी।

नवलजी की साहित्य-साधना अभिभूत करने वाली है और चुनौती देनेवाली भी। विज्ञापन, प्रचार और अतिरिक्त महत्त्वांकाक्षा से मुक्त नवलजी हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत भी हैं और मार्गदर्शक भी। वस्तुत: ऐसे ही व्यक्तित्वों के संदर्भ में बशीर बद्र ने कहा है-

''जब से चला हूँ मैं, मेरी मंजिल पे नजर है
रस्ते में कभी मील का पत्थर नहीं देखा।
ये फूल मुझे यूँ न विरासत में मिले हैं
तुमने मेरा काँटों भरा बिस्तर नहीं देखा।''